अजायब बानी

मासिक पत्रिका
मई-2022

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–बीसवां | अंक–पहला | मई–2022

परमात्मा हर एक के अंदर है (सतसंग) 3

भजन–अभ्यास (एक संदेश) 14

कर्मों का भुगतान (प्रेमियों के सवालों के जवाब) 15

प्रसाद की महानता (एक उपदेश) 30

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04

उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **सीमा आहूजा, डॉ. सुखराम सिंह**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 242 Website : www.ajaibbani.org

RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

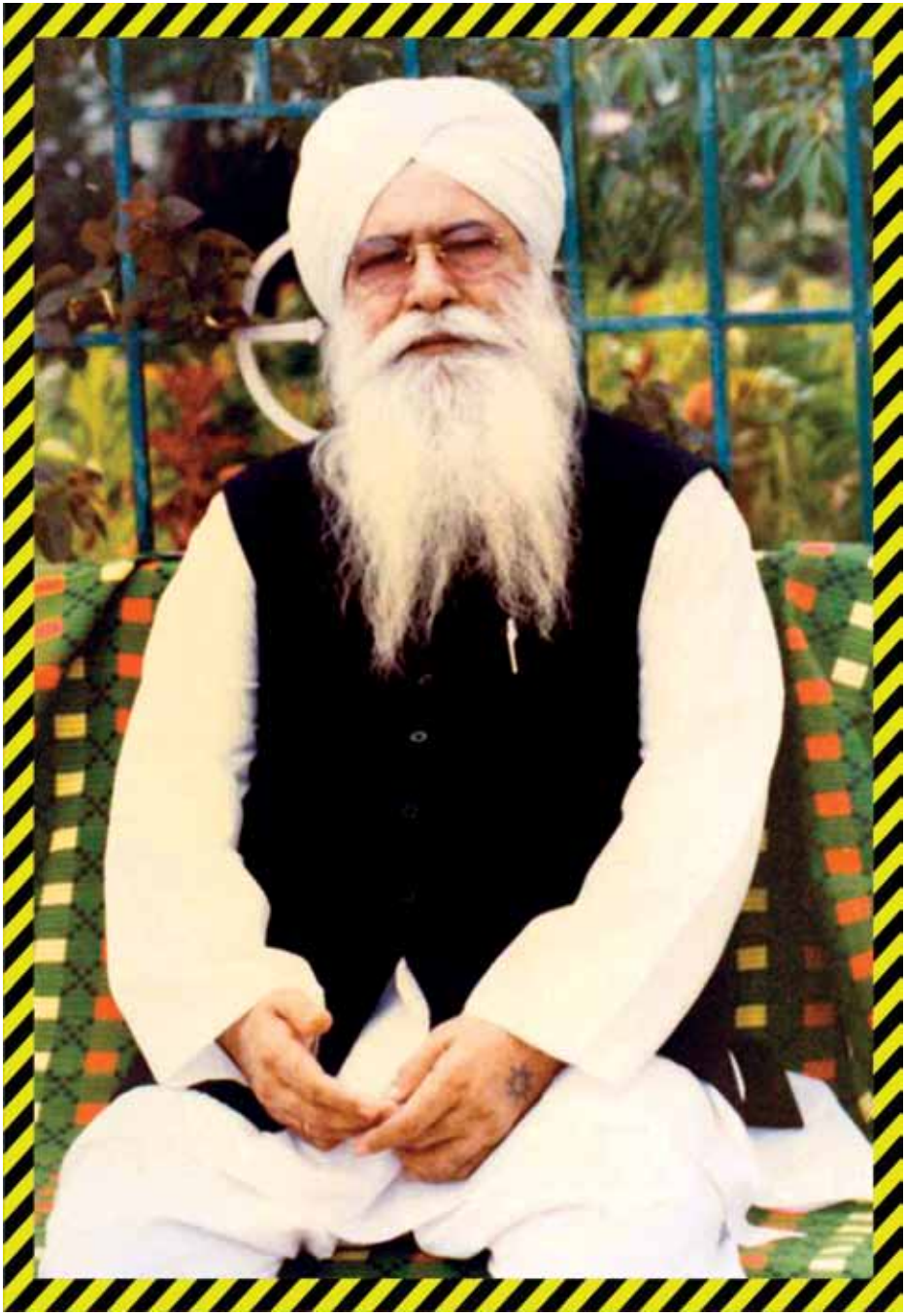

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परमात्मा हर एक के अंदर है

गुरु नानकदेव जी की बानी साँपला (हरियाणा) 12 दिसम्बर 1996 DVD - 584(3)

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है, जिन्होंने अपार दया करके हमें अपना यश करने का मौका दिया। सन्त–महात्मा किसी भी समाज, प्रान्त या मुल्क में आए सब सन्तों का एक ही संदेश है कि वह परमात्मा एक है, कुल कायनात का मालिक है और उससे मिलने का साधन–तरीका भी एक है। सभी सन्त–महात्मा अपनी लेखनियों में बताते हैं कि **परमात्मा हर एक के अंदर है।**

आज तक जिसे भी परमात्मा मिला है अंदर से ही मिला है। परमात्मा से मिलने की सबसे बेहतर जगह इंसान का शरीर है। यह सच्चा मंदिर शरीर किसी इंसान ने नहीं परमात्मा ने बनाया है और न ही इंसान इसका डिजायनर है। सभी सन्तों ने यही बताया है कि परमात्मा ने आँखों के ऊपर खुद ही वह सीट बनाई है जिस पर वह विराजमान है।

सब सन्त यही बताते हैं कि चौरासी लाख योनियाँ भोगने के बाद परमात्मा इंसान का जामा देता है, हर एक को अपने मिलाप का मौका देता है। इंसान का जामा भोग भोगने के लिए नहीं है। पशु–पक्षी भी भोग भोगते हैं, नींद–भूख उन्हें भी लगती है लेकिन इंसान का जामा परमात्मा को प्राप्त करने के लिए हमें एक मौका मिला है अगर हम इस मौके से फायदा नहीं उठाते तो फिर हमारे लिए चौरासी का चक्कर तैयार है।

परमात्मा निरवैर है, निर्भय है, अगम है, अगोचर है, अमर है। उसका नाम भी अगम है, अगोचर है क्योंकि परमात्मा अटल है लेकिन उसने जो वस्तुएं बनाई हैं वे सदा बदलती रहती हैं। यहाँ तक की धातुएं, सोना–चाँदी सब बदलनहार हैं।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''हमारे तुजर्बे में, अभ्यास में एक चीज आई है वह है सच। सच का मतलब जिस चीज का कभी नाश न हो। सच– सतयुग, द्वापर, त्रेता और कलयुग चारों युगों से ही चला आ रहा है। वह सच परमात्मा का नाम है जिसके जरिए परमात्मा रचना पैदा करता है।''

मुझे खुशी है कि प्रेमियों ने बहुत से सतसंग सुन लिए हैं और बहुत से सतसंग छप भी चुके हैं। शुरु–शुरु में जब मैं कोलम्बिया, अमेरिका, कनाडा गया, वहाँ प्रेमी यही सवाल करते थे कि परमात्मा ने विरोधी शक्तियों में काल को क्यों बनाया? काल जीवों को कष्ट देता है। अगर परमात्मा काल न बनाता, काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पैदा न करता तो हमारे लिए परमात्मा से मिलना आसान हो जाता। अब तो प्रेमी जब दर्शनों के लिए आते हैं तो वे रामसत ही बोलते हैं। प्रेमी कमाई करते हैं और मुझे अपने अच्छे अभ्यास के बारे में बताते हैं तो मुझे खुशी होती है।

कोई भी सन्त सुनी–सुनाई बात नहीं करते, वे अपने तजुर्बे की बात करते हैं। मुझे बचपन से ही गुरु की दया से कर्मकांड करने का मौका मिला है। मेरे अंदर तड़प थी, मैंने उस तड़प को पूरा करने के लिए श्रद्धा और प्यार से बहुत कर्मकांड किए हैं जैसे जलधारा करना, धूनिया तपाना, लम्बी यात्राएं करना, तीर्थों पर जाना। मैं बिना किसी दुविधा के मंदिर मस्जिद में बड़ी श्रद्धा से गया हूँ। कर्मकांड का ताल्लुक हमारे शरीर के साथ होता है। आत्मा का कर्मकांड के साथ कोई ताल्लुक नहीं, न ही इससे आत्मा को शान्ति मिलती है और न ही ऊपर कोई चढ़ाई होती है।

मुझे आर्मी में तजुर्बा करने का मौका मिला है। एक जनरल अगर अपने अफसर से यह कहे कि विरोधी फौजें न हों तो मेरे लिए जीतना आसान हो जाए। ये विरोधी पलटने बनाई ही क्यों गई हैं? ये मुझसे मजबूत हैं। हम ऐसे जनरल को बुज़दिल कहेंगे, क्या वह फतह हासिल कर लेगा? आर्मी में जनरल को हुक्म मिलता है, जनरल को नक्शे पर अंगुली रखकर

बताया जाता है कि तुझे यहाँ जाकर आक्रमण करना है। वह बहुत भरोसे और विश्वास के साथ वहाँ जाकर आक्रमण करता है। भरोसे वाला जनरल जरूर कामयाब होता है, जीत प्राप्त करके कई ईनाम भी प्राप्त करता है।

शुरु में जब हम अपनी आत्मा की प्यास बुझाने के लिए सतगुरु के पास जाते हैं तो सतगुरु हमारे आगे रुहानी नक्शा पेश करता है कि आपका सफर पैरों के तलों से शुरु होता है। आपने इस तरह तीसरे तिल पर जाना है, यहाँ आक्रमण करना है यहाँ विरोधी ताकतें बैठी हैं इन विरोधी ताकतों को आप नाम के सहारे, गुरु के आसरे ही जीत सकते हैं। अगर आप इस जगह पहुँचेंगे तो आपको परमपद का ईनाम मिलेगा।

जब सतगुरु ने हमें बताया है कि आपने जहाँ अटैक करना है, जिन दुश्मनों से जाकर लड़ना है जो हमारे विरोध में खड़े हैं अगर हम उस जगह जाने से डरें कि पता नहीं वे कैसे पहलवान हैं? आपको भी शब्द धुन के साथ लैस किया हुआ है, आपके सिर पर पूर्ण गुरु का हाथ है। जनरल को हुक्म देने वाला चुप करके नहीं बैठता, हर मुश्किल को दूर करने के लिए उससे जो हो सकता है वह सब कुछ ही करता है। दुनियावी जनरल की पीठ पर सरकार खड़ी है, मदद के लिए तैयार है।

सतगुरु पूर्ण पुरुष होता है, उसे परमात्मा ने थापा होता है कि तू जितनी रूहें लाएगा मैं उन्हें माफ कर दूँगा, अपने पास जगह दूँगा। सतगुरु की यही सबसे बड़ी दया है कि जहाँ कोई सहायता नहीं करता वहाँ सतगुरु सहायता करता है। हमारे बहुत सारे प्रेमी अभ्यास नहीं करते, श्रद्धा खो बैठते हैं, वे यहाँ बाहर ही इन पाँच बुराइयों में खो जाते हैं। वे बेचारे अंदर जाकर क्या मुकाबला करेंगे?

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सच्चाई के बीज का नाश नहीं होता।'' कोई दो समुंद्र, कोई चार समुंद्र तो कोई सात समुंद्र पार करके आता है। सारे प्रेमी सिर्फ चक्कर लगाने के लिए नहीं आते। इनमें बहुत से

बहादुर भी होते हैं, जो ये लड़ाई लड़ते हैं, वे सतगुरु की रहनुमाई लेने के लिए आते हैं। जो यहाँ भटक जाते हैं उनमें यह कमी होती है कि वे अभ्यास नहीं करते। उनके अंदर प्यार तो होता है तभी वे संगत में आते हैं, नामदान प्राप्त करते हैं लेकिन अभ्यास नहीं करते। आप नाम से जितना दूर जाएंगे उतना ही दुखों–कष्टों से घिर जाएंगे। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

सुख न पाए मूल नाम विछुन्या

उनका तन सुखी नहीं होता। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार कोई न कोई उनके पीछे लगा रहता है। उनके मन को शान्ति नहीं होती, मन में डर लगा रहता है कि मैंने नाम लिया था, मैं बुराई कर रहा हूँ। वे न जीवित होते हैं न मरे होते हैं।

इसलिए मैं दयालु कृपाल का वचन बार–बार दोहराता हूँ, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं, हजार काम छोड़कर भजन–अभ्यास में बैठ जाएं। सतसंग में आने से आपकी आत्मा परमात्मा की तरफ जागेगी और दुनिया की तरफ से सो जाएगी, आपको अपनी गलती का ज्ञान होगा। आपका गुरु जरूर उस गलती को सुधारने की प्ररेणा देगा। अपनी मंजिल की तरफ चाहे हम रोज दो कदम ही चलें, हम कुछ न कुछ उसके नजदीक हो जाएंगे। अगर हम मंजिल से उल्ट चलेंगे तो हमेशा दूर ही दूर होते जाएंगे।''

गुरु साहब हमें प्यार से बताते हैं कि हमें जो भी टाईम मिलता है हमें उस टाईम को जरूर सिमरन में लगाना चाहिए क्योंकि विरोधी ताकतों से बचने के लिए गुरु ने हमें हथियार दिया है, तीसरे तिल का निशान दिया है। तीसरे तिल तक पहुँचना सतसंगी का धर्म हैं।

हमारी हालत पर तरस खाकर महाराज जी कहानी सुनाया करते थे कि एक सिर से गंजा, बहरा और अंधा आदमी किसी सराय में दाखिल हो गया। उसे उस सराय में से निकलने का रास्ता नहीं मिला, उसने बहुत से लोगों से मिन्नतें की कि मुझे बाहर निकालें लेकिन किसी ने उसकी मदद

नहीं की। आखिर उसने सोचा कि मैं खुद ही यत्न करके बाहर निकल जाऊँ। उसने एक तरफ दीवार पर हाथ रख लिया, दीवार को टटोलता–टटोलता चलने लगा। आमतौर पर गंजे आदमी के सिर में खारिश होती है, दरवाजे के पास पहुँचते ही गंजा आदमी दीवार से हाथ हटाकर सिर में खारिश करने लग जाता तो दरवाजा निकल जाता। इसी तरह वह सारी जिंदगी चक्कर लगाता रहा।

प्यारेयो, यह तो एक कहानी है। सच यह है कि परमात्मा हमें चौरासी लाख योनियों के बाद इंसानी जामे का मौका देता है। इंसानी जामें में हम अंधे, बहरे हो जाते हैं। परमात्मा ने हमारे अंदर बेशुमार प्रकाश रखा है, परमात्मा शब्द के जरिए बड़ी जबरदस्त आवाज दे रहा है। हम न उसकी आवाज सुनते हैं न प्रकाश देखते हैं इसलिए हम अंधे हैं।

परमात्मा हर एक के अंदर है, हम उसे बाहर ढूंढते हैं। वह अंदर आवाज दे रहा है, हम बाहर बाजे बजाकर उसे सुनाते हैं। क्या परमात्मा बहरा है? खारिश कौन–सी है? जब हमें चौरासी लाख योनियों के बाद इंसानी जामा मिलता है तो यह एक तरह से हम किले के दरवाजे पर आ गए हैं लेकिन यहाँ विषय–विकारों की खारिश हो रही है, मैं–मेरी की खारिश हो रही है, सामाजिक बंधन की खारिश हो रही है फिर हम यह मौका हाथ से निकाल देते हैं। आपके आगे गुरु नानकदेव जी का छोटा सा शब्द रखा जा रहा हैः

अवरि पंच हम एक जना, किउ राखउ घर बारू मना।।

जीव आत्मा एक है, जो अपने आपको अमर समझकर इस शरीर के अंदर बैठी है। इसकी विरोधी ताकतें पाँच हैं अगर यह आत्मा नाम का आसरा ले ले तो उनके साथ मुकाबला कर सकती है। सिमरन ही उनके ऊपर काबू पा सकता है। जब हम नाम का आसरा छोड़ देते हैं तो हमें हर

किस्म के कष्ट, परेशानियाँ घेर लेती हैं। सिमरन के नजदीक यम नहीं आता अगर नाम नहीं तो यम बुरा हाल करते हैं, मारते हैं नरक में ले जाते हैं।

प्यारेयो, दुनियावी भाषा में अपराधियों के लिए जेल कह देते हैं कि इन्होंने अपराध किया है। पुलिस वाले पकड़कर उन्हें जेल में डाल देते हैं लेकिन पुलिस वालों को हिदायत होती है कि आपने शरीफ आदमी को कुछ नहीं कहना बल्कि उसके साथ प्रेम–प्यार का बर्ताव करना है। इस दुनिया में भी अपराधियों को जेल में डाला जाता है लेकिन अंदर के मंडलों में उसका नाम नरक रखा हुआ है। क्या बाहर की जेल नरक से कम है?

इसी तरह परमात्मा इतने बड़े संसार को बनाकर नेकी का बदला नेकी देता है और बुराई का बदला बुराई देता है। जो जैसा कर्म करता है वह वैसा ही भरता है। काल का अवतार हर युग के अंत में आता है, वह दुष्टों का नाश करने के लिए आता है। सन्त नित अवतार होते हैं, सन्तों के बगैर संसार खाली नहीं रहता। सन्त दुष्टों को मारने के लिए नहीं बल्कि उनका सुधार करने के लिए आते हैं।

मारहि लूटहि नीत नीत, किसु आगै करी पुकार जना।।

दुश्मन वार करते हुए टाईम नहीं देखता, वह हमेशा ही इस ताक में रहता है कि मैं इसे कब हरा लूं! जब भी मौका मिलता है ये आत्मा को हरा लेते हैं। आत्मा जन्म–जन्मांतर से कमजोर है, शब्द की खुराक ही इसे मजबूत बनाती है। हम इसे यह खुराक नहीं दे रहे होते और न बचाने वाला हमारा कोई गुरु ही है जो हमारी मदद करे, हमें दवाई दे या हमें ऐसा कोई हथियार दे जिससे हम इन पाँचों से लड़ सकें। ये आत्मा को अकेली देखकर जब चाहे लूट लेते हैं। ये कभी काम का रूप धारण करके आ जाता है, काम इंसान को जानवर ही बना देता है। काम भोग–भोगकर हम अपनी सेहत का सत्यानाश कर लेते हैं और बाद में सारी जिंदगी पछताते रहते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं इसकी इतनी सजा हैः

निमख स्वाद कारणे कोट दिनस दुख पावे
घड़ी मुहत रंग मांणे रलिया बहोर बहोर पछतावे

एक सैकिंड की विलासिता के लिए करोड़ दिन का दुख मिलता है, करोड़ दिन के तैंतीस हजार साल बनते हैं। क्या कोई समझदार इंसान एक सैकिंड की विलासिता के लिए इतनी सजा मंजूर करेगा? उतनी लज्जत विलासिता में नहीं जितनी इसे रखने में है। भँवरे जलते हुए दीपक के प्रकाश के पास ही आते हैं। इसी तरह जो लोग रोज अंदर काम की कल्पना करते हैं फिर इसकी पूर्ति के लिए जिस्म से काम लेते हैं। जो लोग अंदर कल्पना ही नहीं करते, काम को याद ही नहीं करते तो क्या अंधेरे में भँवरे आएंगे? आत्मा अकेली है जब मौका लगता है ये इसे हरा लेते हैं इस बेचारी की पूँजी लूट लेते हैं। यही आत्मा अगर नाम और सिमरन का आसरा ले ले तो पाँचो डाकू इसके नजदीक नहीं आ सकते।

मारहि लूटहि नीत नीत, किसु आगै करी पुकार जना।।

गुरु नानक साहब प्यार से कहते हैं, ''ये नित्य मारते हैं, नित्य लूटते हैं, यह जीव आत्मा किसके आगे पुकार करे? यह पुकार तो करती है लेकिन हम अंदर जाकर इसकी पुकार नहीं सुनते। हम मन की आवाज सुनते हैं, मन हमें रोज–रोज इस तरफ प्रेरित करता है।

श्री राम नामा उचरू मना।। आगै जम दलु बिखमु घना।।

सन्तों की बानी इस किस्म की लिखी हुई है कि पहली तुक्क में सवाल है और दूसरी तुक्क में आप ही जवाब देते हैं। आपने कहा था, ''किसके आगे पुकार करें, कोई सुनता ही नहीं? आप गुरु के आगे पुकार करें, उसका सिमरन करें नहीं तो आगे बहुत भारी कष्ट है, यम पकड़ लेंगे सजा देंगे। कामी आदमी अंदर बहुत कल्पना करता है, सब कुछ करने के बाद पछतावा करता है। वह सोचता है कि मुझे कोई देख नहीं रहा, मैं जो कल्पना करता हूँ उसे कोई सुन नहीं रहा।'' कबीर साहब कहते हैंः

किए पाप रखे तले दृढ़ाए, प्रगट भए नादान जब पूछे धर्मराय

तू पर्दे के पीछे जो कर रहा है उसे किसी गवाही की जरूरत नहीं। हम जो पाप करते हैं कोई न कोई इसका हिसाब–किताब रख रहा है। आपके अंदर आपका गुरु 'शब्द रूप' में बैठा है। आपके बाँई तरफ काल की शक्ति बैठी है वह भी देख रही है और आपका गुरु भी देख रहा है। काल हमेशा ही गुरु को ताना देता है, ''तूने इसे नाम दिया है, इसकी हामी भरी है, इसकी करतूत देख!'' प्यारेयो, गुरु फिर भी अपना भरोसा नहीं छोड़ता। गुरु कहता है, ''मैं इसे सुधार लूँगा।''

उसारि मड़ोली राखै दुआरा, भीतरि बैठी सा धना।।

आप प्यार से कहते हैं कि परमात्मा ने यह शरीर बनाकर इसके नौं द्वारे रख दिए हैं। नौं द्वारों के अपने–अपने चस्के हैं, आत्मा एक है। हम ये द्वार बंद नहीं करते। मुक्ति का दरवाजा दसवां द्वार है, हम तीसरे तिल पर नहीं जाते। आँखों के द्वार सुंदर–सुंदर रूप, अच्छी–अच्छी चीजों पर लेकर जाते है। कानों के द्वार अच्छे–अच्छे राग पर मस्त कर देते हैं, जिस तरह सर्प बीन के ऊपर मस्त हो जाता है और अपना सिर जोगी की बीन पर रख देता है, इसी तरह हम भी राग पर मस्त हो जाते हैं। जुबान की इन्द्री अच्छे से अच्छे खानों की आशिक होती है।

मैंने कई राजाओं को खाना खाते हुए देखा है। छत्तीस–छत्तीस प्रकार के खाने लगे होते हैं लेकिन वे फिर भी खुश नहीं होते। वे खाना बनाने वालों को डाँटते हैं कि क्या बनाया है, क्या यह इंसानों के खाने वाला खाना है? इस जुबान की इन्द्री को कब तसल्ली होती है। नीचे वाले द्वारों की तो बात ही क्या है? ये सबको बंदर की तरह नचा रहे हैं। इनके स्वाद न किसी ने पूरे किए हैं न कोई कर ही सकता है।

परमात्मा हर एक के अंदर है। परमात्मा ने अपने मिलने का सुरक्षित दसवां द्वार गुप्त रखा हुआ है, बाकी के द्वारों से तो चोर आते हैं। ये नौं

द्वार संसार की तरफ खुलते हैं, हमने इन नौं द्वारों को बंद करके दसवां द्वार खोलना है। दसवां द्वार अंदर की तरफ खुलता है। आत्मा अकेली है, पूर्ण गुरु शब्द की डोर से इसे अपने साथ जोड़ लेता है, इसका साथी बन जाता है फिर यह आत्मा अकेली नहीं रहती।

अंम्रित केल करे नित कामणि, अवरि लुटेनि सु पंच जना।।

आप प्यार से कहते हैं, ''जब हम 'शब्द–नाम' की कमाई करके नौं द्वारे बंद कर लेते हैं, दसवां द्वार खोल लेते हैं तो पाँचो डाकु जो पहले शेर थे वे कमजोर हो जाते हैं। आत्मा को अंदर पीने के लिए अमृत मिल जाता है, इसे वह अमृत गुरु देता है।''

अमृत रस सतगुरु चुवाया दसवें द्वार प्रकट होए आया

पूर्ण महात्मा हमें सिर्फ सिमरन के शब्द ही नहीं बताता बल्कि उसे हमारी आत्मा की बहुत चिंता है। उसकी चिंता तब तक खत्म नहीं होती जब तक वह हमारी आत्मा को नाम का अमृत न पिला दे। प्यारेयो, बाहर तो कभी भरोसा आ गया, कभी टूट गया लेकिन वहाँ पहुँचकर पता लगता है कि गुरु को हमारी कितनी चिन्ता है। गुरु चाहता है कि मैं इसे कब अंदर बुलाऊं और बेफिक्र हो जाऊं। इतनी चिन्ता तो हमारे माता–पिता, बहन–भाई, यार–दोस्त भी नहीं करते।

आप देखें अगर किसी का दुनियावी बच्चा भी अपने पाँव पर खड़ा हो जाता है तो पिता की चिन्ता खत्म हो जाती है कि अब यह अपने पाँव पर खड़ा हो गया है, मैं इसकी तरफ से बेफिक्र हूँ। इसी तरह शिष्य भी अपने पाँव पर खड़ा हो जाए तो गुरु को खुशी होती है।

प्यारेयो, मैं जब बाहर जाता हूँ जो बच्चे अपना सुधार कर लेते हैं अगर उनके माता–पिता जिन्दा होते हैं तो वे मुझसे मिलने आते हैं और कहते हैं कि आपने हमारे बच्चों के लिए बहुत कुछ किया है, हम आपको देखने

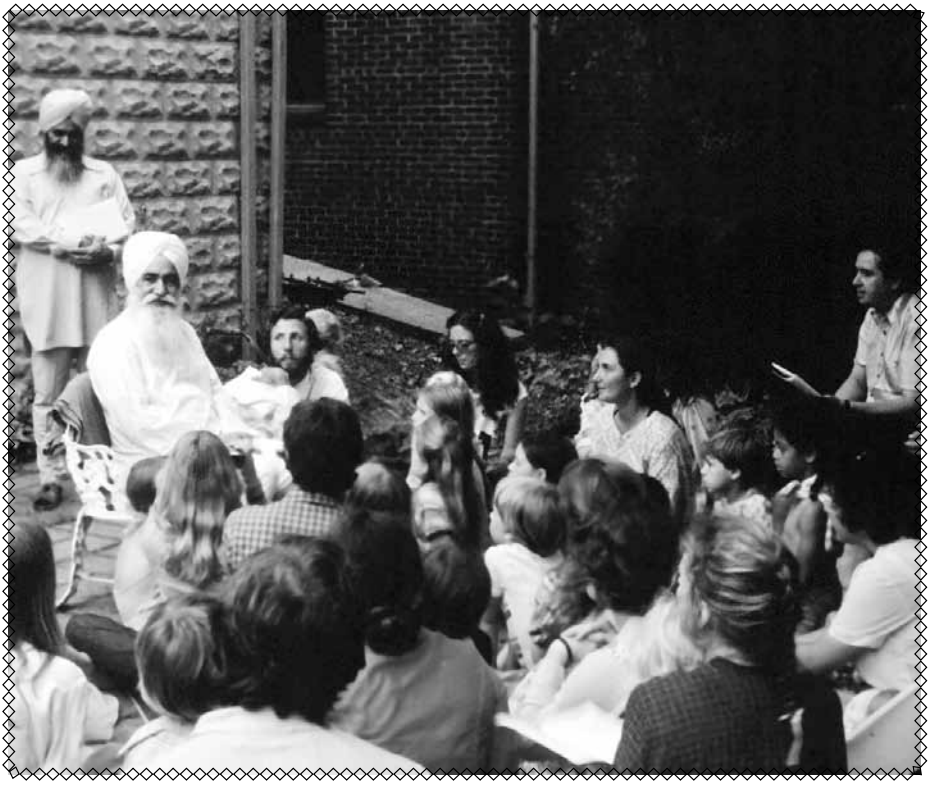

के लिए आए हैं। एक लड़की की माता मुझे देखने के लिए पेरिस से मुम्बई आई। उसने कहा, ''मेरी लड़की बहुत भटकी हुई थी, जब से आप मिले हैं यह शान्त हो गई है और अपने पैरों पर खड़ी हो गई है।'' मेरा जातिय तर्जुबा है अगर किसी सेवक को यह समझ आ जाए कि मेरे गुरु को मेरी कितनी चिन्ता है तो वह कभी भी बुराई की तरफ नहीं जाएगा, कभी भी भजन–सिमरन में रुकावट नहीं डालेगा।

ढाहि मड़ोली लूटिआ देहुरा, सा धन पकड़ी एक जना।।

आप कहते हैं, ''जो इसे लूटते थे इसने उन्हें लूट लिया। जिस तरह मछली पानी में तैरती है उसी तरह आत्मा दसवें द्वार मानसरोवर में

पहुँचकर खुश हो जाती है कि मैं गुरु की दया से इन्हें जीतकर अपने गुरु के पास आ गई हूँ।''

जम डंडा गलि संगलु पड़िआ, भागि गए से पंच जना।।

अब गुरु साहब उनकी हालत के बारे में बताते हैं कि जो नाम नहीं जपते, सिमरन से दूर चले जाते हैं, यम उन्हें पकड़कर जूते मारते हैं। जिन पाँच इन्द्रियों के कहने पर यह पाप करता है, धर्मराज के दरबार में पहुँचकर काम की इन्द्री, क्रोध की इन्द्री, कानों की इन्द्री ये सब इसके खिलाफ हो जाती हैं। जुबान की इन्द्री कहती है कि इसने मेरे ऊपर शराब–मीट रखा। उस समय पता लगता है कि मैंने जिन्हें मित्र बनाया था ये सब मेरे खिलाफ बोल रही हैं।

कामणि लोड़ै सुइना रूपा, मित्र लुड़ेनि सु खाधाता।।

हम रिश्तेदारों, भाई–बहनों की खातिर जो ठग्गी–बेईमानी करके धन–पदार्थ जोड़ते हैं वे सारे इसे लूटना चाहते हैं।

नानक पाप करे तिन कारणि, जासी जमपुरि बाधाता।।

गुरु नानक देव जी ने इस शब्द में प्यार से बताया है कि जो लोग नाम का आसरा ले लेते हैं, वे लोग अपनी आत्मा पर रहम करते हैं, उसे मालिक के दरबार में पहुँचा देते हैं। नाम के साथ पूर्ण गुरु ही जोड़ता है। पूर्ण गुरु ही इन पाँच विरोधी ताकतों से बचाकर अपने घर लेकर जाता है। अगर हम नाम का आसरा छोड़ देते हैं तो हम भी दुखों को आवाजें मारते हैं। हम नाम से जितना दूर जाते हैं उतना ही दुख घेर लेते हैं।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

भजन-अभ्यास

28 जुलाई 1990 अमेरिका DVD - 584(3)

मैं अपने गुरुदेव परमपिता कृपाल का धन्यवाद करता हूँ। मैं उनका ऋणी हूँ कि उन्होंने हमारे ऊपर अपार कृपा करके हम सबको उस नाम के साथ जोड़ा है जो नाम कण-कण में व्यापक है।

हमारी निर्मल आत्मा जब से आध्यात्मिक मंडलों को छोड़कर नीचे आई है इसके ऊपर कारण, सूक्ष्म और स्थूल पर्दे चढ़ गए और इसने अपना प्रकाश बिल्कुल गुम कर लिया है। परमात्मा की अंश आत्मा अपने मूल का रास्ता भुला बैठी है। परमात्मा ने अपार दया करके हमें इंसानी जामा दिया है। परमात्मा आत्मा की दुर्दशा देखकर खुद भी इंसानी जामें में आता है।

हम सुखों-दुखों की दुनिया में फँसे हुए हैं। हम मन-इन्द्रियों का साथ लेकर ही इस नगरी में फँसे हुए हैं। हम अक्सर कहते हैं कि आस को मुराद मिलती है।

जहाँ आसा तहाँ वासा

अगर हम पूरे गुरु से नाम प्राप्त करके उनसे प्रीत और प्रतीत करके अभ्यास करते हैं फिर हम अपने घर की आशा रखते हैं तो वह प्रभु हमें अपने घर में जगह देता है, हम भी वहाँ पहुँच जाते हैं।

हाँ भई, बड़ा अमोलक समय है। इस समय से फायदा उठाते हुए सभी प्रेमी अपने अंदर पाँच पवित्र नामों को याद करके अभ्यास शुरु करें।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

कर्मों का भुगतान

02 अक्टूबर 1985 16 पी. एस. आश्रम, राजस्थान

एक प्रेमी: *आप कृपया हमें यह बताएं अगर हम रोजाना दो घंटे भजन नहीं करते तो गुरु को अपने शरीर पर बहुत कष्ट सहना पड़ता है, इस बारे में आप हमें विस्तार से बताएं?*

बाबा जी: जब हम पौधा लगाते हैं तो हम उम्मीद करते हैं कि जब यह पौधा बड़ा होगा तो हमें फल देगा। इसी तरह जब हम पूर्ण गुरु से नामदान प्राप्त करते हैं तो हमारी बहुत इच्छाएं होती हैं कि हम गुरु के पास आए हैं, गुरु हमारी इच्छाओं को पूरा करेंगे। एक प्यारे ने पत्र लिखा है जिसमें उसने अपनी इच्छाओं के बारे में तो लिखा है लेकिन साथ में यह भी लिखा है कि वह भजन नहीं कर सकता। हम गुरु से प्रार्थना तो करते हैं कि हमें यह चीज मिले, वह चीज मिले लेकिन हम भजन करने के लिए तैयार नहीं।

आप जानते हैं कि अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए हम जिन कर्मों को शामिल करते हैं उन **कर्मों का भुगतान** करना पड़ता है। जब तक कर्मों का भुगतान नहीं होता या जब तक हमारे भाग्य में नहीं लिखा होता, हम वह चीज प्राप्त नहीं कर सकते। हमारे कर्म, हमारे भाग्य में अहम भूमिका निभाते हैं। कभी-कभी हम गुरु से वह भी माँग लेते हैं जो हमारे भाग्य में नहीं लिखा होता लेकिन गुरु प्यार में आकर हमें वह चीज दे देते हैं। गुरु अपने सेवकों के प्यार के वश में वह सब दे देते हैं जो उनके भाग्य में नहीं लिखा होता, भले ही उसमें बहुत सारे कर्म शामिल हों।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''यह काल पर निर्भर करता है कि वह किस तरह भुगतान करवाना चाहता है, उन **कर्मों का भुगतान** शिष्य करे या गुरु करे।'' अगर काल पावर शिष्य के कर्मों के भुगतान के

लिए गुरु का खून चाहता है या गुरु को बुखार या अन्य बीमारी देना चाहता है तो गुरु को काल पावर की इच्छा के अनुसार यह सब करना पड़ता है। काल पावर के इस नियम को बदला नहीं जा सकता। गुरु को सेवक के कर्मों के भुगतान की पीड़ा सहन करनी पड़ती है। जिन **कर्मों का भुगतान** शिष्य को करना चाहिए था लेकिन वह भुगतान नहीं कर सकता और गुरु से प्रार्थना करता है कि मैं इसका भुगतान नहीं कर सकता।

हम भजन करके अपने **कर्मों का भुगतान** कर सकते हैं। हम भजन नहीं करते, हम गुरु से प्रार्थना करते हैं कि आप हम पर दया करें इसलिए गुरु को बहुत कष्ट सहना पड़ता है। आप जानते हैं कि इस दुनिया में हर किसी के एक जैसे विचार नहीं होते।

हो सकता है आपने अपने जीवन में कई बार ऐसी घटनाओं का सामना भी किया होगा कि जैसे कोई व्यक्ति सड़क के किनारे दर्द से कराह रहा है, वहाँ से निकलने वाले बहुत से लोग यह जानने की भी कोशिश नहीं करते कि इसके साथ क्या हुआ है? कुछ ऐसे भी दयालु लोग होते हैं जो उस आदमी से पूछते हैं कि उसे क्या समस्या है? यह भी संभव है कि वह उस पीड़ित आदमी को किसी नजदीकी अस्पताल या किसी डॉक्टर के पास ले जाएं और उसे दवाई दिलवाएं। बाद में वे उस आदमी का हाल जानने के लिए भी जा सकते हैं। वे दयालु लोग ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि परमात्मा ने उनके अंदर मानवता के लिए बहुत दया भरी हुई है।

सन्त–महात्मा इस दुनिया में सभी जीवों के लिए बहुत दया लेकर आते हैं। जब उनका कोई शिष्य या कोई ऐसा आदमी जो उनका सेवक भी नहीं है, उन्हें याद करता है, उनसे मदद के लिए प्रार्थना करता है तो गुरु उसकी मदद के लिए अपने आपको रोक नहीं सकते, वह हमेशा मदद करते हैं। आप जानते हैं कि जब आप किसी की मदद करते हैं तो आपको अपना कुछ खोना पड़ता है।

महाराज सावन सिंह जी अपने जीवन के अन्त समय में बहुत बीमार हो गए, उनका वजन बहुत कम हो गया। उनके पास रहने वाले शिष्यों ने उनसे कहा, ''आपको अपने गुरु बाबा जयमल सिंह जी से प्रार्थना करनी चाहिए कि वे आपको कुछ समय और रहने की इजाजत दें और आपकी सेहत ठीक करें।'' महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''मैं ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि ऐसा करने से मेरी गुरुमुखता में फर्क पड़ेगा। मैं नहीं चाहता कि मेरे कर्मों का बोझ मेरे गुरु उठाएं और उन्हें मेरे लिए कष्ट सहना पड़े अगर आप लोगों की इच्छा है तो आप उनसे प्रार्थना कर सकते हैं।''

इस तरह महाराज सावन सिंह जी ने अपनी बीमारी के लिए कभी भी अपने गुरु से प्रार्थना नहीं की। उनके शिष्य हमेशा ही बाबा जयमल सिंह जी से महाराज सावन सिंह जी के ठीक होने की प्रार्थना करते थे। महाराज सावन सिंह जी हमेशा कहा करते थे, ''शिष्य नहीं जानते वे अंधे हैं, वे नहीं जानते कि गुरु इतना कष्ट क्यों सहन कर रहे हैं। कई बार ऐसा होता है कि जिस शिष्य के मन में गुरु के प्रति बुरा भाव होता है उसके कर्मों के कारण ही गुरु कष्ट झेलता है।''

मेरा खुद का अनुभव है कि सन्तों का अपना कोई कर्म नहीं होता वे अपने शिष्यों के कर्मों के कारण कष्ट झेलते हैं। सन्त–महात्मा कभी यह नहीं चाहते कि उनके गुरुओं को उनके कर्मों के कारण कष्ट झेलना पड़े। अगर शिष्य को थोड़ी सी भी तकलीफ होती है तो शिष्य गुरु से प्रार्थना करता है कि गुरु मेरी तकलीफ को दूर करे। हम थोड़ा सा भी कष्ट नहीं सहना चाहते और चाहते हैं कि गुरु हमारे लिए कष्ट उठाए। जब ऐसा नहीं होता तो हम परेशान हो जाते हैं।

महाराज सावन सिंह जी के एक शिष्य को थोड़ी बहुत परेशानी थी, जब वह जल्दी ठीक नहीं हुआ तो उसे थोड़ा बहुत कष्ट झेलना पड़ा। वह महाराज सावन सिंह जी से नाराज हो गया और उसने किसी दूसरे शिष्य

से कहा, ''मैं गुरु से नाराज हूँ क्योंकि गुरु ने मेरा ध्यान नहीं रखा, मेरी रक्षा नहीं की।'' उस शिष्य ने महाराज सावन सिंह जी के पास जाकर कहा, ''आपके प्यारे शिष्यों में से एक शिष्य आपसे बहुत नाराज है क्योंकि जब वह बीमार था तो आपने उसे ठीक नहीं किया।'' महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''वह बेचारा नहीं जानता कि उसके कर्मों का कितना हिस्सा गुरु ने अपने शरीर पर लिया है और उसका कितना कर्म कम हो गया।''

महाराज सावन सिंह जी अक्सर इस घटना के बारे में बताया करते थे कि वे एक बार किसी शिष्य की बीमारी के कर्मों का भुगतान कर रहे थे और उसी शिष्य को बुरा लग रहा था कि गुरु इतनी तकलीफ में क्यों हैं? उसका विश्वास डगमगा गया कि सावन सिंह जी जैसे सन्त को इतना कष्ट क्यों उठाना पड़ रहा है? उस शिष्य ने उनसे पूछा कि ये आपके खुद के कर्म हैं जो आप भुगत रहे हैं जबकि उस समय महाराज सावन सिंह जी उसी शिष्य के बुरे कर्मों का भुगतान कर रहे थे। उन्होंने उस शिष्य से कहा, ''यह मेरे किसी प्यारे का कर्म है।'' गुरु कभी शिकायत नहीं करते। जब उनके शिष्य उनसे प्रार्थना करते हैं तो वे उनके कर्मों को सहन करके उन शिष्यों के दुःख–दर्द को कम कर देते हैं।

मैं अक्सर आपको अपने बचपन के बारे में बताया करता हूँ कि बचपन में मेरे पूरे शरीर पर ज्यादा से ज्यादा फोड़े की शक्ल में कुछ ऐसी चीज उठी जिसमें पस भर गई। शरीर पर एक तरह का कोढ़ जैसा हो गया, शरीर का कोई भी हिस्सा खाली नहीं बचा, काफी दवाईयां ली। मैं हिन्दुस्तान के ज्यादा से ज्यादा तीर्थों पर गया लेकिन कोई आराम नहीं आया। उन दिनों मुझे बहुत तकलीफ थी जब मेरे कपड़े उन फोड़ों पर लग जाते तो मैं दर्द की वजह से बहुत रोता–चिल्लाता था। कोई आदमी मेरे पास खड़ा नहीं होता था, हर कोई मुझसे घृणा करता था। मेरे पिता जी मेरी ऐसी हालत देखकर रो पड़ते क्योंकि मैं उनका इकलौता पुत्र था।

आखिर मेरे पिता जी मुझे बाबा बिशनदास जी के पास लेकर गए, उस समय मेरा मिलाप बाबा बिशनदास जी से हुआ। पिता जी ने उन्हें मेरी हालत के बारे में बताया कि परमात्मा ने मुझे एक ही बच्चा दिया है, मुझे नहीं पता इसने पिछले जन्मों में कितने बुरे कर्म किए हैं। मैं इसे तड़पते हुए नहीं देख सकता,परमात्मा इसे ठीक कर दे या अपने पास वापिस बुला ले।

बाबा बिशनदास जी ने हँसकर कहा, ''परमात्मा किसी को वापिस नहीं बुलाता, हर किसी को अपने कर्मों का हिसाब देना पड़ता है या कोई व्यक्ति उसके कर्मों का जिम्मेदार बन जाए तो वह उसका भुगतान कर सकता है।'' बाबा बिशनदास जी ने मेरे पिता जी से पूछा, ''क्या आप इसके कर्मों का भुगतान करने के लिए तैयार हैं?'' मेरे पिता जी चुप रहे। आप जानते हैं माता–पिता अपने बच्चे को बहुत प्यार करते हैं लेकिन जब उनसे पूछें क्या आप अपने बच्चे के **कर्मों का भुगतान** करने के लिए तैयार हैं? कोई भी तैयार नहीं होता।

बहुत सोचने के बाद बाबा बिशनदास जी ने कहा कि पंजाब में तख्तूपुरा एक तीर्थस्थान है। तख्तूपुरा में गुरुनानक देव जी ने कुछ समय जमीन के नीचे बैठकर अभ्यास किया था। अगर आप तख्तूपुरा चलें तो मैं आपको कुछ सुझाव दूँगा। मैं इसे वहाँ ले जाऊँगा, यह वहाँ बिल्कुल ठीक हो जाएगा। कुदरत को यही मंजूर है कि इसके शरीर पर कुछ चिह्न गोदे जाएं, पहले वे यही चिह्न मेरे माथे पर गोदने लगे तो पिता ने रोकर कहा, ''यह हमारा एक ही बच्चा है आप ऐसा न करें यह देखने में भद्दा लगेगा।'' एक चिह्न मेरे हाथ पर, दो चिह्न मेरे शरीर के अन्य हिस्सों पर गोदे गए।

उसके बाद मैं चार मील चलकर गाँव सैदोंके आया। मेरा शरीर बिल्कुल साफ हो गया, कोई पस नहीं निकल रही थी, मुझे कोई तकलीफ नहीं हो रही थी। यह सब बाबा बिशनदास जी की दया से ही हुआ कि आपके सामने यह साफ शरीर बैठा है, मैंने कोई दवाई नहीं ली।

सन्त–सतगुरु सेवक का काम तो करते हैं लेकिन जाहिर नहीं करते। बाबा बिशनदास जी बहुत दयालु थे। मैं नहीं जानता कि मैंने कौन–से बुरे कर्म किए थे कि मेरे शरीर के इन फोड़ों को दूर करने के लिए बाबा बिशनदास जी को कितना कष्ट सहना पड़ा।

यह गुरु की दया ही है कि जब हम गुरु से प्रार्थना करते हैं कि आप हमारे कष्ट दूर कर दें तो हम अपने **कर्मों का भुगतान** करने के लिए तैयार नहीं होते, एक तरह से हम गुरु पर अपने कर्मों का बोझ डालकर उनसे भुगतान करवाना चाहते हैं। गुरु हमसे बहुत प्यार करते हैं इसलिए वह हमारे कष्ट उठाते हैं। जब हम भजन नहीं करते तो गुरु के शरीर को कष्ट होता है। जब हम भजन करते हैं तो गुरु हमें अंदर से दुःखों को सहने की ताकत प्रदान करते हैं।

जब मैं दूसरी बार टूर पर बोस्टन गया, एक पुराना सतसंगी अपने मित्र को मेरे पास लेकर आया जिसने थोड़ी देर पहले ही नामदान लिया था। उस नये प्रेमी को चर्मरोग था, उसके शरीर पर फोड़े–फुन्सियाँ थी। उसने अपनी कमीज उतारकर मुझे अपनी तकलीफ के बारे में बताया। उस समय मुझ पर गुरु की बहुत दया थी, मैंने गुरु कृपाल का नाम लेकर उसके शरीर को छुआ, वह अगले दिन ही ठीक हो गया। जब पुराने सतसंगी ने देखा कि उसका मित्र रोग से मुक्त हो गया है तो उसने महसूस किया कि गुरु ने ही उसके मित्र की बीमारी को दूर किया है।

वह पुराना सतसंगी मेरे पास आया और रोकर कहने लगा, ''सन्त जी, मेरा यह मतलब बिल्कुल नहीं था, मैं तो सिर्फ आपको बताना चाहता था कि यह नया नामलेवा है और इसे यह तकलीफ है। वह तो सिर्फ आपकी सलाह चाहता था, वह भी नहीं चाहता था और मैं नहीं चाहता था कि आपको अपने शिष्य के कर्मों का खामियाजा भुगतना पड़े।'' उस समय मैं क्या कह सकता था? जो हो गया, सो हो गया।

गंगानगर में महाराज कृपाल का एक नामलेवा व्यापारी था। वह शरीर पर चर्मरोग और फोड़े–फुन्सियाँ से बहुत दुखी था। उसने कई सालों तक डॉक्टरों को दिखाया लेकिन उसे कोई मदद नहीं मिली। एक बार जब महाराज कृपाल गंगानगर आए तो वह व्यापारी महाराज जी के सामने कपड़े उतारकर खड़ा हो गया। गुरु की दया–दृष्टि ने उसके सारे कष्टो को दूर कर दिया और वह ठीक हो गया।

परमात्मा ने गुरु को इस दुनिया में दुःखी आत्माओं की मदद करने के लिए भेजा है। गुरु किससे और कैसे यह कह सकते हैं कि मैं तुम्हारे कर्मों का बोझ नहीं उठा सकता, मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकता। अगर शिष्यों के अंदर गुरु के लिए सच्चा प्यार है तो वे कभी भी ऐसा कुछ नहीं करेंगे क्योंकि वे शिष्य जानते हैं कि जब गुरु दया करके शिष्यों के दर्द को दूर करते हैं तो ऐसा नहीं कि दर्द खत्म हो जाता है किसी और के खाते में नहीं जाता। अगर दर्द आपके खाते में खत्म हो जाता है तो निश्चित रूप में वह दर्द, गुरु के खाते में जाता है और गुरु को इसका भुगतान करना पड़ता है।

बाबा बिशनदास जी मुझे एक मुस्लिम सन्त हजरत लूथ की कहानी सुनाया करते थे। दो नगर थे, एक बार परमात्मा ने फ़रिश्तों को संदेश देकर हजरत लूथ के पास भेजा, ''अगर इन दोनों नगरो में कम से कम पचास लोग परमात्मा का ध्यान करते हैं और पूरी तरह से परमात्मा की तरफ समर्पित हैं तो परमात्मा इन दोनों नगरों पर अपनी कृपा बनाए रखेंगे, इन पर कोई प्राकृतिक आपदा नहीं आएगी। अगर पचास से कम लोग ईमानदारी से परमात्मा का ध्यान नहीं करते तो इन नगरों पर परमात्मा की कृपा नहीं होगी, वहाँ पत्थरों और आग की वर्षा से लोग नष्ट हो जाएंगे।''

हजरत लूथ एक पूर्ण सन्त थे, वे जानते थे कि इन दो नगरों में परमात्मा को मानने वाले कितने भक्त हैं। हजरत लूथ ने फ़रिश्तों से कहा, ''पचास लोग तो ज्यादा हैं चाहे दस लोग ही भक्ति कर रहे हैं तब

भी परमात्मा को इनके ऊपर दया करनी चाहिए, इन नगरों को नष्ट नहीं करना चाहिए।'' पूर्ण गुरु जानते हैं कि कितने लोग परमात्मा की भक्ति करते हैं। हमें लाखों लोग ऐसे मिल जाएगें जो नाम और शोहरत के लिए दिखावे की भक्ति करते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

जग में उत्तम कडिए विरले केई के

आप भीतर से देखेंगे तो वास्तव में परमात्मा की भक्ति करने वाले कुछ ही लोग मिलेंगे। कबीर साहब कहते हैंः

अग्नि लगी आकाश को झड़-झड़ पैंण अंगियार
सन्त न होते जगत में तो जल मरता संसार

आसमान में आग लगी है और चारों तरफ से आग बरस रही है। अगर संसार में सन्त न होते तो यह संसार जल गया होता। सर्वशक्तिमान परमात्मा सन्तों को संसार में भेजता है। सन्त प्रभु से जुड़े होते हैं और उन आत्माओं को नाम के साथ जोड़ते हैं जो उनके पास प्रभु की भक्ति करने के लिए आती हैं। 'शब्द-नाम' की वजह से यह दुनिया कायम है, जहाँ पाप बढ़ता है वहाँ बहुत से लोग 'शब्द-नाम' प्राप्त नहीं कर सकते।

जहाँ सन्त नहीं होते उस जगह को परमात्मा कुदरती प्रकोप-भूकम्प, बवन्डर, तूफान या किसी और तरीके से नष्ट कर देता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि वहाँ पाप बढ़ जाता है, वहाँ इतने लोग नहीं होते जो परमात्मा की भक्ति करते हैं। सन्त संसार में आकर लोगों को 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ते हैं। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे अभ्यास करते हैं या नहीं, सिर्फ शब्द की वजह से ही संसार कायम है। ये दुनिया वैसी ही है जैसी अभी है इसलिए गुरु बार-बार संसार में आते हैं और आत्माओं को 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

बलिहारी गुरु आपणे देयोहाड़ी सद वार
जिन माणस ते देवते कीए करत न लागी वार

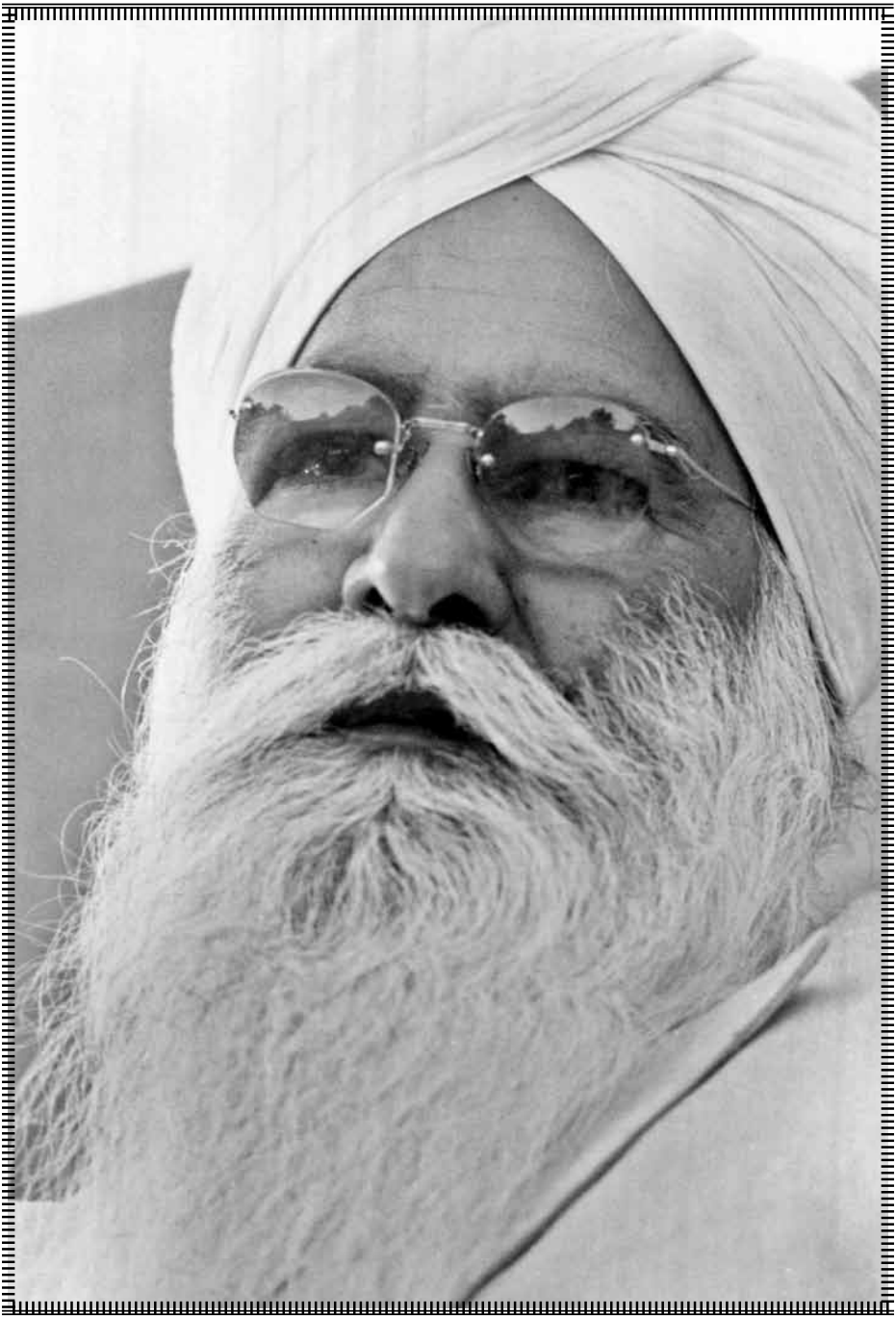

मैं अपने आपको अपने गुरु पर न्यौछावर करता हूँ, वह मुक्त है और हमें मुक्त करने के लिए इस इंसानी जामें में आया है। गुरु सदा शिष्यों पर दया करते हैं। जो शिष्य सच्चे मन से भजन करते हैं, उनमें कर्मों का फल भोगने की शक्ति आ जाती है। ऐसे शिष्य जब किसी कठिनाई में होते हैं तो वे कठिनाई से दूर नहीं भागते और न ही गुरु से अपने कर्मों को भुगतने के लिए कहते हैं। ऐसे शिष्य हमेशा ही अपने कर्मों को खुद सहन करते हैं लेकिन गुरु उन पर दया करते हैं और मुनासिब मदद भी करते हैं। हम **कर्मों का भुगतान** किताबें पढ़कर नहीं सिर्फ अंदर जाकर ही समझ सकते हैं।

जैमिनी मुनि, वेद व्यास के शिष्य थे। जैमिनी मुनि ने **कर्मों के भुगतान** पर एक किताब लिखी। जब वह इस किताब को लेकर वेद व्यास जी के पास गए तो वेद व्यास जी ने कहा, ''यह एक अच्छी किताब है, बेहतर यह था अगर तुम अभ्यास करके अंदर गहराई में जाकर किताब लिखते लेकिन तुमने यह किताब मन–बुद्धि से लिखी है।'' जैमिनी मुनि ने कहा, ''ध्यान करने और अंदर जाने का क्या फायदा है? मैंने बहुत अच्छी किताब लिखी है इसे पढ़ने वाले को पता लग जाएगा कि **कर्मों का भुगतान** क्या है? मैंने इस किताब में जो लिखा है मैं वही करूंगा और सदा अच्छे–बुरे कर्मों के परिणामों के बारे में जागरूक रहूँगा।''

वेद व्यास जी अभ्यास करते थे, वे जानते थे कि जैमिनी सिर्फ बाहर से ही बातें कर रहा है उसके पास अंदर का अनुभव नहीं और वह अपनी भक्ति में मजबूत नहीं। वेद व्यास ने कहा, ''ठीक है, मैं किसी दिन तुम्हारी परीक्षा लूँगा फिर तुम्हें महसूस होगा कि अनुभव करने के बाद ही लिखना चाहिए।'' जैमिनी मुनि को अपने लेख पर भरोसा था, जैमिनी मुनि ने कहा, ''ठीक है, आप जब भी चाहे ऐसा कर सकते हैं।''

कुछ समय बाद वेद व्यास जी एक औरत का भेष धारण करके रात के समय जैमिनी मुनि की कुटिया के बाहर खड़े होकर रोने–चिल्लाने लगे।

उस औरत ने जैमिनी मुनि से कहा, ''मैं एक राजकुमारी हूँ, मैं रास्ता भटक गई हूँ। आप कृपा करके आज की रात मुझे अपनी कुटिया में जगह दें, मैं सुबह होते ही चली जाऊंगी।'' जैमिनी मुनि ने कहा, ''मैं अपने पास किसी औरत को नहीं रखता, आपको कहीं और आश्रय ढूंढना चाहिए।'' उस औरत ने कहा, ''अगर आप मुझे आसरा नहीं देंगे तो मुझे जंगल में कोई शेर–चीता खा जाएगा और आप मेरी मौत के जिम्मेदार होंगे।''

औरत के मुँह से यह सुनकर जैमिनी मुनि उसे अपनी कुटिया में जगह देने के लिए तैयार हो गए। जैमिनी मुनि ने उस औरत से कहा, ''ठीक है, तुम अंदर से दरवाजा बंद कर लो अगर मैं भी तुम्हें दरवाजा खोलने के लिए कहूँ तो तुम दरवाजा मत खोलना।'' जब रात को जैमिनी मुनि अभ्यास के लिए बैठे तो उस औरत के बारे में सोचने लगे कि वह अकेली है, क्यों न उससे बात की जाए, बात करने में क्या हर्ज है?

मन हमेशा ही वकील की तरह अंदर से समझाना शुरु कर देता है कि बात करने में क्या है? लेकिन हम नहीं जानते कि यह मन आखिर हमसे क्या करवाने जा रहा है? इस बात का अहसास तभी होता है जब हम उसमें पूरी तरह लिप्त हो जाते हैं और अपना सब कुछ खो बैठते हैं। जैमिनी मुनि ने मन के वश होकर कुटिया का दरवाजा खटखटाया। उस औरत ने कहा कि मैं दरवाजा नहीं खोलूंगी क्योंकि आपने ही मुझे ऐसा हुक्म दिया है। जैमिनी ने कहा, ''कुटिया मेरी है तू इसकी मालकिन कैसे बन गई?'' जब काम ने जोश मारा तो जैमिनी मुनि छत तोड़कर नीचे कूद गए वहाँ उन्होंने वेद–व्यास जी को बैठे हुए देखा तो बहुत शर्मिन्दा हुए।

हम कर्म के शास्त्र को तभी समझ सकते हैं जब हम इन सब चीजों को अपने अनुभव में लाते हैं, यह लिखने–पढ़ने का विषय नहीं।

राजा भोज बहुत पढ़ा–लिखा, संस्कृत का विद्वान और अच्छा धर्मी राजा था, उसने वेदों–शास्त्रों के ज्ञान की बहस में कई विद्वानों को हराया

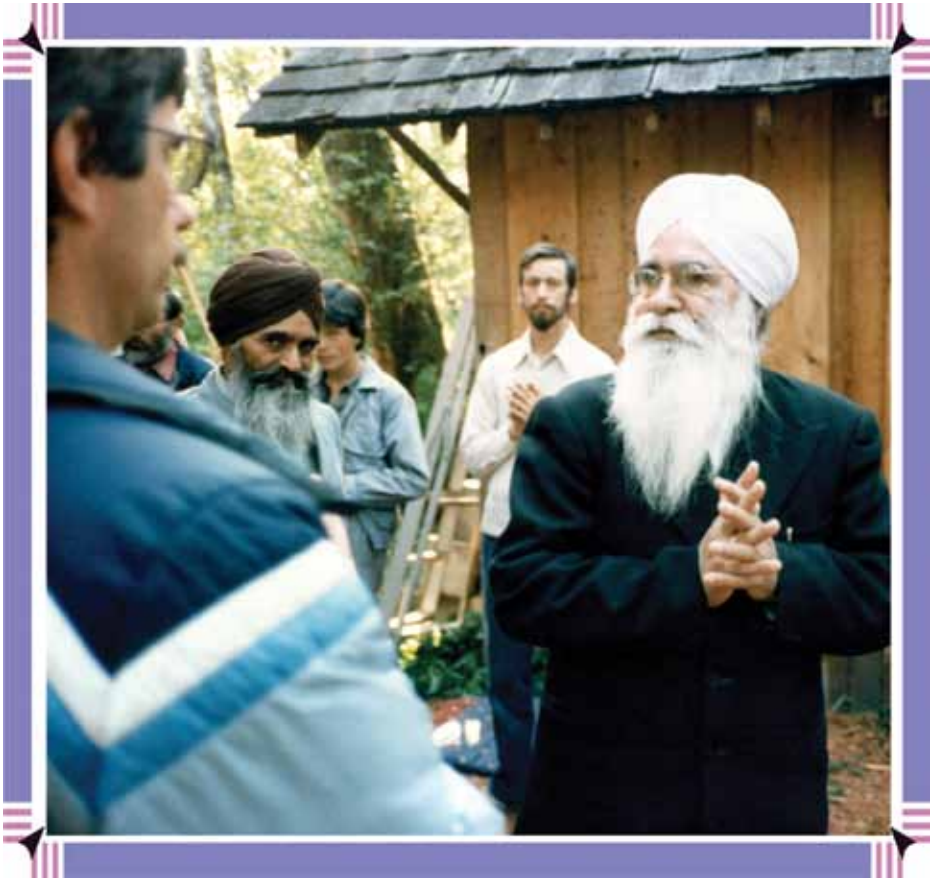

था। एक बार उसने सोचा कि मैं राजा क्यों बना? परमात्मा ने मुझ पर इतनी कृपा की कि मुझे राजा बना दिया। मैंने पिछले जन्मों में ऐसा क्या अच्छा कर्म किया था कि परमात्मा मुझ पर इतना दयालु हो गया कि उसने मुझे राजा बना दिया।

राजा भोज को अपने आप इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिला तो उसने अपने दरबार में बहुत से ज्ञानियों, साधु-सन्तों को बुलाया। उनमें से एक साधु इस रहस्य को जानता था लेकिन वह खुद राजा भोज को नहीं बताना चाहता था तो उसने राजा से कहा, ''यहाँ शहर की सफाई करने वाली

एक भंगन है तुम उसके पास जाओ वह तुम्हें बताएगी कि तुम इस नगर के राजा क्यों बने?''

राजा भोज जब उस भंगन के पास गए तो भंगन ने राजा से कहा, ''देखो, शहर के बाहर एक साधु बैठा है वह तुम्हें बताएगा कि तुम राजा क्यों बने?'' राजा भोज उस साधु के पास गए तो उस साधु ने कहा, ''ठीक है, मैं आपको बताऊँगा कि आपने पिछले जन्म में ऐसा क्या किया है जिसके परिणाम स्वरूप आप राजा बने। लेकिन पहले मैं आपको यह दिखाना चाहता हूँ कि स्वर्ग में आपके लिए क्या किया जा रहा है?''

उस साधु ने अपनी योग शक्ति से स्वर्ग से एक विमान उतारा और राजा भोज को उस विमान में बिठाकर स्वर्ग में ले गया। राजा भोज ने देखा कि वहाँ एक बहुत बड़ा महल बन रहा है। राजा भोज ने पूछा कि यह महल क्यों बन रहा है? उन्होंने बताया कि यह महल राजा भोज के लिए बनाया जा रहा है, वह एक धर्मी राजा है उसके राज्य में कोई भी दुःखी नहीं। सांसारिक दुनिया में अपना समय पूरा करने के बाद जब राजा भोज यहाँ आएंगे तो उन्हें रहने के लिए यह महल दिया जाएगा।

राजा भोज को यह दिखाने के बाद वह साधु उसे वापिस दुनिया में ले आया और उसने कहा, ''मैं आपको बताऊँगा कि आप इस जन्म में राजा क्यों बने? पहाड़ियों के ऊपर एक पागल औरत रहती है, वह अपने कपड़े फाड़ती है और हर समय इधर-उधर भटकती रहती है। वह पागल औरत पिछले जन्म में हमारी माँ थी। तुम, मैं और वह भंगन हम भाई-बहन थे। हमारे पिता ने जब शरीर छोड़ा उस समय हम बहुत गरीब थे, हमारी माता ने बड़ी मुश्किल से कहीं से आटा लाकर चार रोटियाँ बनाई।

हम सबके पास खाने के लिए एक-एक रोटी थी। हम जैसे ही खाना शुरु करने वाले थे तो एक साधु आया उसने हमसे खाना माँगा। हमारी माता उस साधु पर बहुत नाराज हुई और उसने उस साधु के कपड़े फाड़

दिए। हमारी बहन ने परेशान होकर उस साधु पर कचरा फैंक दिया और मैंने गुस्से में उस साधु को जलते हुए डंडे से पीट दिया। हमने उस जन्म में जैसे कर्म किए उसके अनुसार हमें अगला जन्म मिला।

हमारी माता ने साधु के कपड़े फाड़े थे इसलिए वह पागलपन में अपने कपड़े फाड़ने के लिए मजबूर हो जाती है। हमारी बहन इसलिए भंगन बनी क्योंकि उसने साधु पर कचरा फैंका था। मैंने साधु को जलते हुए डंडे से पीटा था इसलिए इस जन्म में मुझे अग्नि के पास बैठकर तपस्या करनी पड़ रही है। आप हम सबमें से छोटे थे, आपके मन में साधु के लिए दया थी। आपने अपनी एक रोटी उस साधु को दे दी, वह साधु आपसे बहुत प्रसन्न हुआ इसी वजह से आप राजा बने और जीवन का आनन्द ले रहे हैं।

कोई पढ़कर विद्वान या पंडित बनकर यह नहीं जान सकता कि हम किन **कर्मों का भुगतान** कर रहे हैं या किन कर्मों का आनन्द ले रहे हैं? अभ्यास के द्वारा अंदर जाकर हमारा जीवन एक खुली किताब बन जाता है जिससे हम आसानी से जान लेते हैं कि हम किस कर्म को भोग रहे हैं और किस कर्म का आनन्द ले रहे हैं?

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि गुरु आत्माओं पर बहुत दया बरसाते हैं लेकिन हम कृतघन हैं, हमें इसका अहसास नहीं होता। हम समझ नहीं पाते कि गुरु हमारे ऊपर कितनी दया कर रहे हैं और हम गुरु के प्रति अपना आभार भी प्रकट नहीं करते लेकिन गुरु बहुत मेहरबान हैं।

पूर्ण सन्त इतने दयालु होते हैं अगर वह किसी पेड़ का फल खा लें तो उस पेड़ को मनुष्य योनि मिलती है। अगर पूर्ण सन्त किसी जानवर की सवारी कर लें तो उस जानवर को मनुष्य योनि मिलती है। अगर संयोग वश पूर्ण सन्त किसी जीव पर अपना पैर रख दें और वह मर जाए तो उसे भी मनुष्य योनि मिलती है। आप सोचकर देखें, पूर्ण सन्त आत्माओं पर इतनी

दया बरसाते हैं कि पेड़–पौधों, कीड़ों–मकोड़ों और जानवरों के शरीर से उन्हें भी मनुष्य योनि प्रदान करते हैं।

पूर्ण सन्त, शराबी–कबाबी और बुरे लोगों को भी अपनी संगत में लाकर उन्हें अपने असली घर जाने के लिए तैयार करते हैं। सन्तों के अलावा कौन हम पर इतनी दया कर सकता है? वास्तव में सन्त ही सन्तों की दया को जानते हैं। कोयल ही कोयल की सार को जानती है कि कोयल कहाँ से आती है? इसी तरह सन्त हमारे बीच रहकर दुनियादारी निभा रहे हैं और दूसरी तरफ वे अलग रूप में किसी को नाम दे रहे हैं और दूसरी आत्माओं की देखभाल कर रहे हैं।

मैं जब बाबा बिशनदास जी को महाराज सावन सिंह जी के पास लेकर गया उस समय बाबा बिशनदास जी के नजदीक गाँव में रहने वाला एक मुसलमान फकीर फत्ती भी हमारे साथ था। महाराज सावन सिंह जी हम सबसे बात कर रहे थे तो उस मुसलमान फकीर फत्ती ने खड़े होकर कहा, ''महाराज जी, इस जन्म से पहले आप पंजाब में फरीदकोट के राजा के रुप में पैदा हुए थे।'' महाराज सावन सिंह जी चुप रहे फिर थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा, ''हाँ, मुझे पता है अगर अब मैं उन महलों में जाऊँ तो मुझे कोई घुसने भी नहीं देगा और मुझे यह भी पता है कि इससे पहले के जामों में मैंने कड़ाके की गरीबी भी देखी है।''

इस तरह सन्त अपने अतीत और भविष्य के बारे में सब कुछ जानते हैं। वे अपने शिष्यों के अतीत और भविष्य के बारे में भी जानते हैं। वे सर्वव्यापी हैं, सचेत हैं। वे भूत, वर्तमान और भविष्य के बारे में भी जानते हैं। वहाँ तक पहुँचे हुए सन्त ही अपने गुरु की शान और दया को समझ सकते हैं, हम संसारी लोग गुरु की महिमा कैसे जान सकते हैं? इस सवाल का जवाब देने में काफी ज्यादा समय लग गया। मुझे अफसोस है कि दूसरे प्रेमियों के सवालों के जवाब रह गए, इसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

प्रसाद की महानता

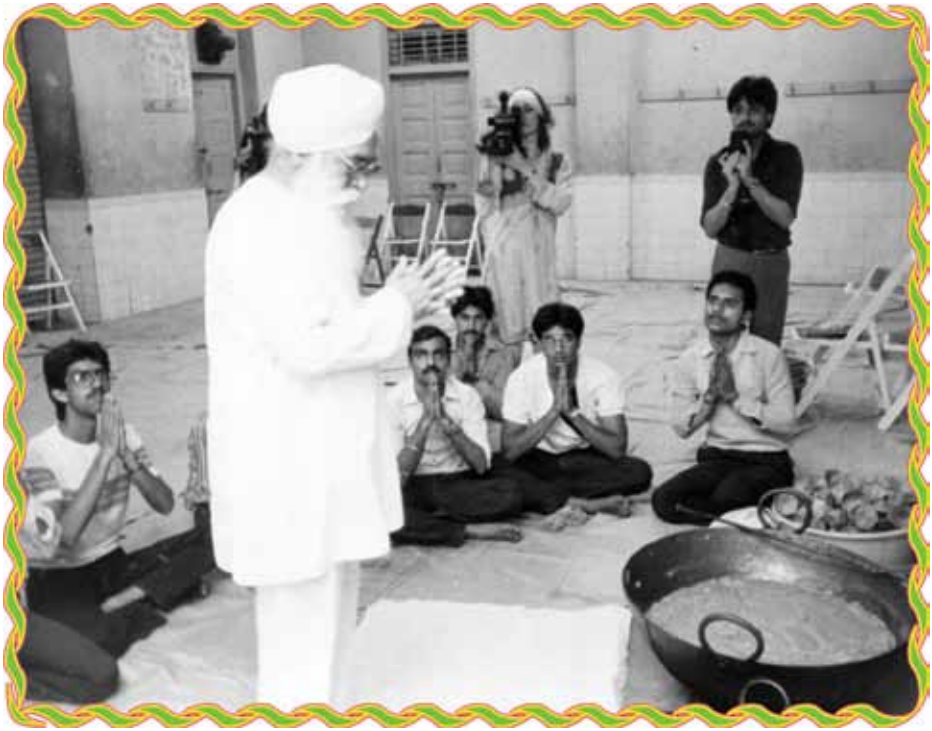

जब गुरु गोबिंद सिंह जी को मुगल फौजों ने श्री आनन्दपुर साहिब से उजाड़ दिया, उस समय आप पंजाब के दीना गाँव में आकर रहे। उस गाँव में शमीर और लखमीर दो भाई थे, उन्होंने गुरु गोबिंद सिंह जी को अपने पास पनाह दी। उस समय गुरु गोबिंद सिंह जी को पनाह देना मौत को आवाज लगाना था। जब पंजाब के गर्वनर वजीर खान को पता लगा कि गुरु गोबिंद सिंह जी दीना गाँव में हैं तो उसने संदेश भेजा कि यह सरकार का भगौड़ा है इसे पकड़कर हमारे पास लाओ। शमीर और लखमीर दोनों

भाइयों ने गर्वनर को पत्र लिखा कि इन्हें पकड़कर तेरे पास लाने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता और तू हमें मारकर ही इन्हें पकड़ सकता है। गुरु गोबिंद सिंह जी छह महीने तक उनके पास रहे।

एक दिन गुरु गोबिंद सिंह जी के दिल में दया आई, उन्होंने शमीर को फुल्लियों का प्रसाद देकर कहा, ''तू इस प्रसाद को खा ले और अपने परिवार को भी खिला देना।'' शमीर का मामा, सुल्तान पीर को मानता था। काफी समय पहले हिन्दुस्तान में सुल्तान पीर एक महात्मा हुए हैं। किसी को यह भी मालूम नहीं कि वह कितने समय पहले हुए हैं फिर भी लोग उनको मानते हैं। शमीर के मामा ने कहा, ''जो खुद उजड़ा हुआ है वह तुम्हें कैसे बसा देगा? फुल्लियों के थोड़े से प्रसाद से क्या हो जाएगा? अगर तुम गुरु साहब की बात मानोगे तो सुल्तान पीर तुम्हारी जड़े उखाड़ देगा।'' शमीर ने डर की वजह से प्रसाद को जमीन में दबा दिया। जब वह प्रसाद जमीन में दबा रहा था तो घर की छोटी बच्चियों ने देख लिया, उन बच्चियों ने वह प्रसाद खा लिया।

जब गुरु गोबिंद सिंह जी को पता लगा तो उन्होंने कहा, ''शमीर तूने उस प्रसाद से फायदा नहीं उठाया, वह प्रसाद तो मालिक की तरफ से था। उस प्रसाद से तेरी और तेरे परिवार की मुक्ति हो जाती। जिन बच्चियों ने प्रसाद खाया है उनका कल्याण होगा, तुम्हारे कुल में जो लड़कियाँ पैदा होंगी वे बेऔलाद नहीं होंगी।''

फिर गुरु गोबिंद सिंह जी ने शमीर से कहा, ''तू जहाँ तक अपने घोड़े पर चक्कर लगाकर आएगा वहाँ तक तेरा राज्य हो जाएगा।'' शमीर ने घर जाकर यह बात बताई तो उसके मामा ने फिर वही कहा कि जो खुद उजड़ा हुआ है वह तुम्हें क्या देगा? शमीर एक तरफ तो गुरु गोबिंद सिंह जी से डरता है और दूसरी तरफ अपने मामा से भी डरता है, आखिर डरते–डरते वह घोड़े को गाँव के नजदीक ही घुमाकर ले आया।

गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा, ''अच्छा भई, जो तेरी मर्जी। हम तो तुझे दुनिया का भी सब कुछ देना चाहते थे और आगे तुझे अंदर तो लेकर जाना ही है।'' गुरु गोबिंद सिंह जी ने रात को उठकर शमीर को आवाज लगाई, ''हाँ भई शमीर, तीसरा वचन माँग?'' शमीर ने कहा, ''आप मेरे जन्म–मरण का चक्कर काट दें, मुझे और कुछ नहीं चाहिए।'' गुरु गोबिंद सिंह जी ने उससे कहा, ''अच्छा जाकर सो जा।''

जब शमीर जाकर सोया तो उसने बहुत लम्बा स्वप्न देखा, स्वप्न में उसका बहुत जगह जन्म हुआ। आखिर एक जन्म में वह बहुत ही गरीब घर में पैदा हुआ। वहाँ अकाल पड़ गया, वह खेत में जाकर जड़ी–बूटियाँ और घास–फूस वगैरह तोड़कर खा रहा था। वह पेड़ से नीचे गिर गया, उसकी टाँग टूट गई। जब वह दर्द से दुखी हुआ तो उसकी आँख खुल गई, उस समय उसके मुँह में वही घास थी जिसे वह स्वप्न में खा रहा था।

वह काँपते हुए गुरु गोबिंद सिंह जी के पास आया, सबूत के तौर पर उसके मुँह में घास थी। उसने गुरु गोबिंद सिंह जी को अपने स्वप्न के बारे में बताया कि मुझे इस तरह का स्वप्न आया है। गुरु साहब ने कहा, ''हाँ भई, तूने इतनी योनियों में जाना था उन योनियों का भुगतान स्वप्न में ही हो गया है। अब तेरे लिए गुरु नानक का दरबार खुला है, वह खुद आकर तुझे ले जाएंगे।''

वह इलाका हमारे घर के आस–पास ही था। जिन लड़कियों ने वह प्रसाद खाया था गुरु गोबिंद सिंह जी के वरदान के अनुसार वे लड़कियाँ भक्तिभाव वाली बनी, वे बेऔलाद नहीं थी उन सबके बच्चे हुए। यह वरदान आज तीन सौ साल बाद भी सच है।

हमें अपने गुरु पर विश्वास करना चाहिए। गुरु का दिया हुआ प्रसाद अनमोल होता है, दया से भरा होता है। हमें प्रसाद की कद्र करनी चाहिए।

***

RNI No - RAJHIN/2003/9899

सतगुरु पूर्ण पुरुष होता है, उसे परमात्मा ने थापा होता है कि तू जितनी रूहें लाएगा मैं उन्हें माफ कर दूँगा, अपने पास जगह दूँगा। सतगुरु की यही सबसे बड़ी दया है कि जहाँ कोई सहायता नहीं करता वहाँ सतगुरु सहायता करता है।

– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज –